RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · JAN 2021 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

दुनिया बड़ी उम्मीदों के साथ साल 2021का स्वागत कर रही है

कोविड–19 के त्रासद अनुभव के बीच हम 2021 का स्वागत करने जा रहे हैं। कोरोना के साये में बीता 2020 जाते–जाते भी नये स्ट्रेन का भयावह चेहरा दिखाते हुए विदा ले रहा है। भले ही लोग इसे सदी का भयावह साल मानें पर सही मायने में देखा जाए तो मानव इतिहास के सबसे भयावह सालों में से 2020 रहा है। हालांकि 2020 के साल की भयावहता का आभास तो 2019 की अंतिम तिमाही में ही होने लगा था जब चीन के वुहान में कोरोना के मामले सामने आने लगे थे। हालांकि हमारे देश में इसकी भयावहता मार्च के पहले पखवाड़े के खत्म होते–होते सामने आने लगी थी। कोविड–19 ने जीवन के हर क्षेत्र में अपना असर छोड़ा है। देखा जाए तो कोरोना सही मायने में कार्ल मार्क्स के साम्यवाद का प्रत्यक्ष अवतार माना जा सकता है जिसने शक्तिशाली, अति विकसित से लेकर कमजोर व अविकसित देशों तक किसी को नहीं छोड़ा तो अमीर से लेकर गरीब तक समान रूप से इसके कुप्रभाव से बच नहीं सके। अगले ने पूरी निष्पक्षता बरती और पूरी तरह से ऑब्जेक्टिव तरीके से अपना प्रभाव दिखाया। कोरोना के असर को लेकर उस पर कोई भी देश और कोई भी नागरिक पक्षपात का आरोप नहीं लगा सकता। इसका असर किसी एक देश पर नहीं पड़ कर समूची दुनिया के देशों में देखने को मिला है। एक और जहां लंबे लॉकडाउन के चलते बिना किसी भेदभाव के घर में कैद होने का अनुभव कराया तो दूसरी और शुरुआती दौर में सभी गतिविधियों और अब भी बहुत–सी गतिविधियों पर लगभग विराम ही लगा दिया। शुरुआती दौर में कोरोना के नाम से इस तरह भय व्याप्ती का अनुभव भी रहा जब सारी मानवीय संवेदनाओं को ताक में रखे देखा।

दूसरी ओर समाज का एक उजला पक्ष भी सामने आया जब धरती के साक्षात् भगवान यानी चिकित्सकों और उनसे जुड़े चिकित्सा कर्मियों के सेवाभाव के साक्षात् दर्शन किए। डरते–डरते भी लोग एक दूसरे की सहायता के लिए आगे आए। अन्नदाता की मेहनत का असर भी देखने को मिला कि देश दुनिया में घर की चारदीवारी में कैद होने के बावजूद कोई भूखा नहीं रहा। इस महामारी ने आपदा प्रबंधन का भी नया अनुभव कराया। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, को चरितार्थ करते हुए इनोवेशन और नवाचारों की देन इस दौरान साफ तौर से देखी जा सकती है। 2020 इसलिए भी याद किया जाएगा जब संभवतः मानव इतिहास में इतने नए शब्दों से समूची दुनिया को साक्षात् होना पड़ा। जिस तरह का लॉकडाउन 2020 में देखने को मिला मानव इतिहास में इस तरह का लॉकडाउन का भी पहला ही अनुभव होगा। सोचिए लॉकडाउन से लेकर सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्दों और उनका प्रत्यक्ष उपयोग इसी साल देखने को मिला है। लॉकडाउन, क्वारंटाइन, सुपर स्प्रेडर, कंटेनमेंट जोन, आइसोलेशन, जूम, कांटेक्ट ट्रेसिंग, रेमडेसिविर, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन, पीपीई किट, सोशल डिस्टेंसिंग, हेल्थ एडवाइजरी, डेडिकेटेड कोविड सेंटर, वेबिनार, वर्चुअल मीटिंग्स, वर्चुअल सुनवाई, वर्क फ्रॉम होम आदि से लगभग प्रतिदिन साक्षात् होना पड़ा। जो मास्क केवल डॉक्टरों के लिए वो भी ऑपरेशन थिएटर के लिए जाना जाता था, वह हर व्यक्ति की अनिवार्य जरूरत बन गया तो कोरोना वैक्सिन को लेकर वैज्ञानिकों के प्रयास काफी हद तक सफल रहे। लगभग थम चुकी आर्थिक गतिविधियां साल की तीसरी तिमाही तक पटरी पर आने लगीं तो आर्थिक क्षेत्र में थोड़ा आशा का संचार दिखाई देने लगा है।

2020 की आखिरी तिमाही में जो आशा का संचार होने लगा था उसे साल के अंत तक इंग्लैण्ड में पाए गए कोरोना के नए अवतार ने हिला कर रख दिया है। स्ट्रेन को रोकने के लिए इंग्लैण्ड के साथ ही दुनिया के कई देश आस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान, दक्षिणी अफ्रिका जैसे देश नए साल में लॉकडाउन लगाने की तैयारी में हैं तो भारत सहित दुनिया के लगभग सभी देशों ने नए साल के जश्न मनाने पर रोक लगा दी है। ऐसे में नए साल के जश्न की बात तो दूर की है पर कोरोना वैक्सीन से लोगों में आशा का संचार अवश्य होने लगा है। देश में डेडिकेटेड कोविड सेंटरों और केन्द्र व राज्य की सरकारों ने जिस संवेदनशीलता से कोरोना आपदा का प्रबंधन किया है वह नई आशा का संचार लेकर आया है। इसी तरह से देश में जिस तरह से पीपीई किट जिनके लिए विदेशों से आयात पर निर्भर रहना पड़ता था, आज हम निर्यात करने लगे हैं। मॉस्क और सेनेटाइजर का कुटीर उद्योग सामने आया है तो वेंटिलेटरों का देश की मांग के अनुसार निर्माण होने लगा है। उद्योग धंधे भी लगभग पटरी पर आने लगे हैं तो अर्थव्यवस्था में सुधार की आशा भी तेजी से बंधी है। रोजगार के अवसर बढ़ाने के समग्र प्रयास जारी हैं। किसान आंदोलन को अलग रख दिया जाए तो देश के आर्थिक हालात तेजी से पटरी पर आने लगे हैं। फिर भी इससे नकारा नहीं जा सकता कि 2021 के शुरुआती छह माहों से कोई खास आशा नहीं की जानी चाहिए। क्योंकि कोरोना के नए रूप का असर और कोरोना वैक्सीन की उपलब्धता के चलते छह माह तो चुनौती भरे ही रहने वाले हैं।

फिर भी निराश इस कारण से नहीं होना चाहिए कि नया जो आता है वह अपने आप में अनेक संभावनाओं को लेकर आता है। वैक्सीन की उपलब्धता से आशा का संचार हुआ है तो आर्थिक गतिविधियां संचालित होने से अर्थव्यवस्था में सुधार की चहुंओर आशा व्यक्त की जा रही है। सबसे बड़ी बात की लोगों में आत्मविश्वास जगा है और इसे शुभ संकेत माना जा सकता है। मानव इतिहास में ऐसे अवसर आते रहते हैं और जाते रहते हैं। इन सब हालातों के बीच आशाओं भरा 2021 आरंभ हो रहा है। आशा की जानी चाहिए कि 2021 हालातों को सामान्य बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

–चंदन सिंह

World Braille Day: 4 January

World Braille Day is observed globally on 4th January since 2019. The day is celebrated to raise awareness of the importance of Braille as a means of communication in the full realization of the human rights for blind and partially sighted people. The day is marked remembering the birth anniversary of Louis Braille, the inventor of Braille for people with visual disabilities. Louis Braille was born on 4th January 1809 in the town of Coupvray in northern France. What is Braille?

Braille is a tactile representation of alphabetic and numerical symbols using six dots to represent each letter and number, and even musical, mathematical and scientific symbols. Braille (named after its inventor in 19th century France, Louis Braille) is used by blind and partially sighted people to read the same books and periodicals as those printed in a visual font.

Braille is essential in the context of education, freedom of expression and opinion, as well as social inclusion, as reflected in article 2 of the Convention on the Rights of Persons with Disabilities.

-Vanshika

Happy Republic Day 2021: From importance to celebrations, all you need to know about 26 January

Republic Day is celebrated every year on 26 January to commemorate the day the Constitution of India came into effect. Even though we had gained independence on 15 August, 1947, nascent India did not have its own laws which were drafted and finally adopted in the year 1950.

Let's look into the importance of the Republic Day and how is it going to be celebrated this year. Republic Day 2021: Importance When leaders realised that a full-fledged constitution that caters to the specific needs of Indians is needed, a Drafting Committee was appointed on 29 August, 1947. The panel is responsible for scrutinising the "draft of the text of the Constitution of India prepared by Constitutional Adviser" along with "giving effect to the decisions already taken in the Assembly and including all matters which are ancillary thereto or which have to be provided in such a Constitution".The committee was asked to submit the final draft in front of the Constituent Assembly for consideration and revision.

The Drafting Committee had seven members, namely Alladi Krishnaswami Ayyar, N Gopalaswami, BR Ambedkar, KM Munshi, Mohammad Saadulla, BL Mitter and DP Khaitan. At its first meeting on 30 August, 1947, BR Ambedkar was elected as its chairperson.

After workingfor 2 years, 11 months and 18 days, the committee was prepared with the draft. The Constituent Assembly then formally adopted it on 26 November, 1949. However, the day it came into effect was pushed back two months to 26 January, 1950 as it marked the anniversary of the Purna Swaraj Diwas which was on 26 January, 1930. On this day, a resolution demanding "complete freedom" from the British was drawn.

Republic Day 2021: How will it be celebrated this year.Every year, a Republic Day parade is held at the Rajpath in New Delhi. The day begins with the prime minister paying tribute to the soldiers who sacrificed their lives for the country at the Amar Jawan Jyoti in India Gate. The president also hoists a flag at Rajpath and several important dignitaries, alongside the Prime minister and the president, are present for the parade.

Colourful tableaus, tank show, air show and bike pyramids are some of the most famous attractions of the parade. Also, a foreign head of the state is invited as the chief guest. However, things will be different this year, given we are still coping with the pandemic. British Prime Minister Boris Johnson had to call off his trip due to the second lockdown imposed in the country and a large number of people will not be allowed in 2021.

The number of marching contingents from the armed forces has been also reduced.Undefined.

-ShreyArya

NPR: First step to NRC

What is NRC , CAA ? When People were already stuck in these two things and now people got more confused that what is this new abbreviation NPR ? NPR is National Population Register and people who were protesting against CAA , NRC are against NPR too. Because they assume that NPR is the first step towards NRC.

As kiren rijiju (sports minister &ministry of youth affairs of India) has said in the parliament that -"The government has now decided to create the national register of indian citizens (NRIC / NRC) based on the information collected under the scheme of national population register (NPR) by verifying the citizenship status of all individuals in the country."

According to the Indian government, NPR is just a population register which will contain records of the population of people living in India and in the process of NPR government officials will come to your home to take required information from you to mark your name in the national population register And the people who will be out of the NPR , they will be marked as 'Doubtful Citizens' and they can sue to the court whenever they want .

-Ishita

Poem

I sleep to escape the reality

Lying on my bed inside
With 1 am night sky outside
Tranquil roads
and a chaotic mind
I am ready to escape the reality.
With a fear of getting itnto the reality again next morning
The reality to see the factual sphere
The reality of not being loved back.
I sleep yet couldn't
How can I
Wet eyes are wakeful
Wet cheeks displease me
I sleep to escape the reality
The reality of not so happy family
The reality of being questioned
"How are you?"
With the most erratic answer
"I'm fine."
But wait...
This is my moment
No sights, no eyes, no prejudice, no sapience, no humans.
Let me cry
Let me tell me
I'm not okay.
I cried, my eyes cried, cried my heart...
Timely i sleep
All my nerves, my soul, my heart were at peace
Far far away from the reality
I seep in my own world.
Good night pseudo world
Meet you at the reality check.

Hritik Joshi
BA(JMC)- Semester - 2nd

THIS MONTH

January 12, 1991 - Congress authorized President George Bush to use military force against Iraq following its invasion of Kuwait.

•••

January 12, 1996 - The first joint American-Russian military operation since World War II occurred as Russian troops arrived to aid in peacekeeping efforts in Bosnia.

•••

January 12, 1999 - President Bill Clinton sent a check for $850,000 to Paula Jones officially ending the sensational sexual harassment legal case that ultimately endangered his presidency. The president withdrew $375,000 from his and Hillary Rodham Clinton's personal funds and got the remaining $475,000 from an insurance policy. The lawsuit had exposed the president's affair with Monica Lewinsky and resulted in investigations by Independent Counsel Ken Starr that led to Clinton's impeachment by the House of Representatives and subsequent trial in the Senate.

•••

January 12, 1932 - Hattie W. Caraway, a Democrat from Arkansas, was appointed to the U.S. Senate to fill the term of her deceased husband. Later in the year, she became the first woman elected to the Senate.

•••

January 13, 1935 - The population of the Saar region bordering France and Germany voted for incorporation into Hitler's Reich. The 737 square-mile area with its valuable coal deposits had been under French control following Germany's defeat in World War I.

•••

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Analog- A signal that fluctuates exactly like the original stimulus.

•••

Aspect Ratio- The width-to-height proportions of the standard television screen and therefore of all analog television pictures: 4 units wide by 3 units high. For DTV and HDTV, the aspect ratio is 16 × 9.

•••

Aperture -Iris opening of a lens, usually measured in *f*-stops.

•••

Auto-focus -Automated feature whereby the camera focuses on what it senses to be your target object.

•••

Arc - To move the camera in a slightly curved dolly or truck. .

•••

Aliasing: The steplike appearance of a computer-generated diagonal or curved line. Also called jaggies or stairsteps.

•••

Automatic Gain Control (agc)- Regulates the volume of the audio or video level automatically, without using manual controls.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

संपादक की कलम से

निजी क्षेत्र को इस तरह निशाना बनाया जाता रहा तो कौन निवेश के लिए आगे आयेगा?

नाम है किसान आंदोलन का लेकिन चल रहा है देश की छवि बिगाड़ने का प्रयास। नाम है किसान आंदोलन का लेकिन चल रहा है भारत में निवेश बाधित करने का प्रयास। नाम है किसान आंदोलन का लेकिन चल रहा है देश में खड़े हो रहे बुनियादी ढांचे को गिराने का प्रयास। नाम है किसान आंदोलन का लेकिन चल रहा है कॉरपोरेट के खिलाफ माहौल बनाने का प्रयास। पंजाब के किसान नेताओं के इस आंदोलन के दौरान जरा एक–एक चीज पर गौर करेंगे तो साफ हो जायेगा कि लेफ्ट की धुन बजा रहे इन नेताओं ने क्यों अड़ियल रुख अपनाया हुआ है। रिलायंस जियो ने जब मुफ्त में सिम दिया तो सभी ने रात–रात भर लाइनों में लगकर सिम लिया और उसका जमकर उपयोग किया लेकिन जब पैसे लगने लगे तो रिलायंस बुरा हो गया। जिस तरह रिलायंस के खिलाफ नफरत फैलायी जा रही है उससे सभी को सचेत होना चाहिए क्योंकि अगर निजी क्षेत्र को इस तरह निशाना बनाया गया तो कौन उद्योगपति निवेश के लिए आगे आयेगा।

आज जब सरकारी नौकरियां बहुत कम रह गयी हैं ऐसे में निजी क्षेत्र ही दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाले देश भारत के लिए बड़ा सहारा है। रिलायंस बार–बार स्पष्ट कर चुकी है कि उसको कृषि कानूनों से कोई लाभ नहीं होने वाला है फिर यह विवाद क्यों? सोशल मीडिया पर मुकेश अंबानी की फोटो के साथ तरह–तरह के कमेंट किये जा रहे हैं। जरा आप लोग बताइये कौन–सा उद्योगपति नुकसान के लिए कंपनी खड़ी करता है। हर कोई फायदा देखता है। हाँ यह फायदा किसी के नुकसान की कीमत पर नहीं होना चाहिए। लॉकडाउन के बाद अब जब धीरे–धीरे देश अनलॉक हो चुका है तो सभी को एक साथ आकर देश को आगे बढ़ाने का काम करना चाहिए। लेकिन नहीं, कुछ लोग हैं जो देश की उन्नति में बाधाएं खड़ी करने के प्रयास में जाने–अनजाने सहयोग करते रहते हैं। पंजाब में जिस तरह जियो के मोबाइल टावरों को नुकसान पहुँचाया गया है उससे क्या हासिल हो गया? कंपनी को नुकसान हो ना हो लेकिन आसपास के लोगों को जो नुकसान झेलना पड़ रहा है उसकी कल्पना कर सकते हैं क्या? एटीएम नहीं चलने की खबरें आ रही हैं, बैंकिंग सेवाओं के प्रभावित होने की खबरें आ रही हैं, ऑनलाइन क्लासेज नहीं कर पा रहे हैं बच्चे, लोग कॉल नहीं कर पा रहे हैं। उपद्रवियों ने किसका नुकसान किया? हैरानी की बात है कि पंजाब में इस तरह का उप्रदव मचाया जा रहा है और राज्य सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी नजर आ रही है। राज्यपाल राज्य के अधिकारियों को तलब करते हैं तो मुख्यमंत्री भड़क उठते हैं और आरोप लगा देते हैं कि राजभवन का दुरुपयोग किया जा रहा है।

खैर अब उम्मीद पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय से है जिसने रिलायंस जियो इन्फोकॉम लि. की एक याचिका पर सुनवाई करते हुये मंगलवार को पंजाब सरकार एवं केंद्र को नोटिस जारी किया। रिलायंस ने अपनी याचिका में उन 'शरारती लोगों' के खिलाफ कार्रवाई किये जाने का अनुरोध किया है जिन्होंने कंपनी के दूरसंचार बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचाया और प्रदेश में जबरन इसके स्टोर बंद करवा दिये। उल्लेखनीय है कि केंद्र के तीन कृषि कानूनों के खिलाफ जारी प्रदर्शन के दौरान पंजाब में 1500 से अधिक मोबाइल टावरों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की सहायक कंपनी रिलायंस जियो ने दायर याचिका में कहा है कि 'निहित स्वार्थ' के कारण कंपनी के खिलाफ अफवाहें फैलायी जा रही हैं। याचिका में कहा गया है कि याचिकाकर्ता अथवा उसकी मूल कंपनी अथवा सहायक कंपनियों की कारपोरेट अथवा ठेके की खेती में उतरने की कोई योजना नहीं है।

दूसरी ओर भीषण सर्दी, बारिश और जलभराव की स्थिति में भी पंजाब के किसान कृषि सुधार कानूनों को वापस लेने एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी की अपनी मांग को लेकर दिल्ली से लगी सीमाओं पर डटे हैं। सरकार और किसान संगठनों के बीच सोमवार को हुई सातवें दौर की वार्ता भी बेनतीजा रही थी। किसान संगठनों के प्रतिनिधि इन कानूनों को पूरी तरह निरस्त करने की अपनी मांग पर अड़े रहे जबकि सरकार कानूनों की ''खामियों'' वाले बिन्दुओं या उनके अन्य विकल्पों पर चर्चा करना चाह रही थी। दोनों के बीच अब अगली बातचीत आठ जनवरी को होगी।

बहरहाल, इन किसान नेताओं को भले सर्दी में इस तरह जाम लगा देने में आनंद आ रहा हो लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में दिल्ली और उसके आसपास रहने वालों को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है शायद इसका अंदाजा यह किसान नेता नहीं लगा पा रहे या लोगों की समस्याओं की ओर से जानबूझकर आंखें मूंदे हुए हैं। बार–बार विपक्ष के नेताओं से मिल रहे किसान नेताओं का प्रयास है कि भीड़ को संसद सत्र तक दिल्ली की सीमाओं पर बनाये रखा जाये ताकि सत्र के दौरान सरकार पर कृषि सुधार कानूनों की वापसी का दबाव बनाया जा सके।

Why traveling once in a while is good for mental peace?

"We travel not to escape life but for life not to escape us."

The first things that strike in your mind when you get tired from your work, it may be food, amazing sunset, exploringnew places, spending time with loved ones, and the list will continue. Holidays are something that brings excitement and these things that ultimately affect your health, but experts suggest that traveling can also do wonders for your mental health. Traveling is obviously all about taking a break from everyday life and finding your inner self, which is important to reduce pressure.

So, here we have some tips for you, why traveling is good for your mental health:

Trip enhances happiness and pleasure:

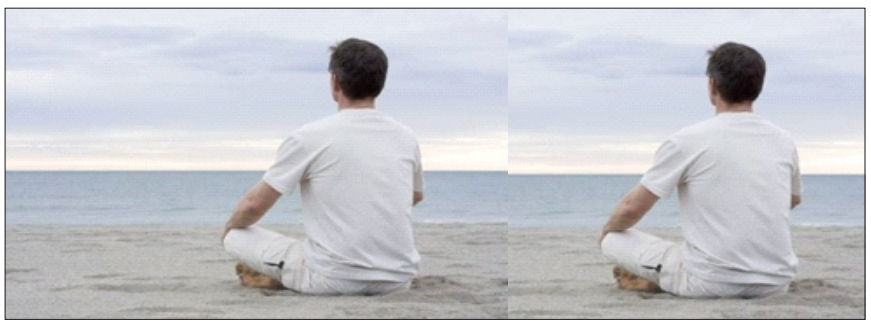

Traveling actually means you don't have to go to work, it changes your daily metabolism, boosting your mood and confidence in yourself. Staying in one position also makes you feel depressed, not only affecting your mood, but also affecting your brain. Our brain takes a pause after that at some point. So it's necessary to travelto be happy and enjoy the things you'll get on your journey.

It changes the way you think:

Break from your daily routine and travel means, you take a break from your surroundings and habits as well. You get a chance to create new habits and distance yourself from your everyday life, which means you can think about new things in your life differently.

It maintains your mental stability:

As I said earlier, you may feel excited about moving and staying elsewhere, but at the same time, it will scare you as the location becomes uncertain, which will eventually make your mental health more complicated. In fact, meeting various challenges at the new site and surrounded by unfamiliar people, will help you understand what life is like and how you will adjust to such an environment.

It teaches you to live with less:

If you return home after a couple of weeks or months, you will learn to live with less in your daily life. You can notice you don't need as many household items as you need. You may realize that you don't have to own two or three cars. You do tend to remove all the needless chatter at school, the same thing with your subconscious as well.

You have no complaints with your life:

If you see what other people have in poorer countries are going through and come back home to India, you shouldn't be complaining about traffic or other problems. Always try to be aware of this when you don't complain you have more peace in your life.

So, remember when you are making that decision to travel, you are actually making a decision to invest in your own inner peace, which is the best investment you can ever make in your life.

-ShreyArya

स्वामी विवेकानंद का रोम-रोम राष्ट्रभक्ति और भारतीयता से सराबोर था

स्वामी विवेकानंद जी ने भारत को व भारतत्व को कितना आत्मसात कर लिया था यह कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर के इस कथन से समझा जा सकता है जिसमें उन्होंने कहा था कि' यदि आप भारत को समझना चाहते हैं तो स्वामी विवेकानंद को संपूर्णतः पढ़ लीजिये'। नोबेल से सम्मानित फ्रांसीसी लेखक रोमां रोलां ने स्वामी जी के विषय में कहा था' उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असंभव है वे जहां भी गये, सर्वप्रथम ही रहे। प्रत्येक व्यक्ति उनमें अपने मार्गदर्शक व आदर्श को साक्षात् पाता था। वे ईश्वर के साक्षात् प्रतिनिधि थे व सबसे घुल मिल जाना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देख ठिठक कर रुक गया और आश्चर्यपूर्वक चिल्ला उठा– 'शिव!'। यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।'

ज्ञानपिपासु और घोर जिज्ञासु नरेन्द्र का बाल्यकाल तो स्वाभाविक विद्याओं और ज्ञान अर्जन में व्यतीत हो रहा था किन्तु ज्ञान और सत्य के खोजी नरेन्द्र अपने बाल्यकाल में अचानक जीवन के चरम सत्य की खोज के लिए छटपटा उठे और वे यह जानने के लिए व्याकुल हो उठे कि क्या सृष्टि नियंता जैसी कोई शक्ति है जिसे लोग ईश्वर कहते हैं? सत्य और परमज्ञान की यही अनवरत खोज उन्हें दक्षिणेश्वर के संत श्री रामकृष्ण परमहंस तक ले गई और परमहंस ही वह सच्चे गुरु सिद्ध हुए जिनका सान्निध्य और आशीर्वाद पाकर नरेन्द्र की ज्ञान पिपासा शांत हुई और वे सम्पूर्ण विश्व के स्वामी विवेकानंद के रूप में स्वयं को प्रस्तुत कर पाए। स्वामी विवेकानंद एक ऐसे युगपुरुष थे जिनका रोम–रोम राष्ट्रभक्ति और भारतीयता से सराबोर था। उनके सारे चिंतन का केंद्रबिंदु राष्ट्र और राष्ट्रवाद था। भारत के विकास और उत्थान के लिए अद्वितीय चिंतन और कर्म इस तेजस्वी संन्यासी ने किया। उन्होंने कभी सीधे राजनीति में भाग नहीं लिया किंतु उनके कर्म और चिंतन की प्रेरणा से हजारों ऐसे कार्यकर्ता तैयार हुए जिन्होंने राष्ट्र रथ को आगे बढ़ाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस युवा संन्यासी ने निजी मुक्ति को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया था। बल्कि करोड़ों देशवासियों के उत्थान को ही अपना जीवन लक्ष्य बनाया। राष्ट्र और इसके दीन–हीन जनों की सेवा को ही वह ईश्वर की सच्ची पूजा मानते थे।

Vol. 16 **No.** 1
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

सेवा की सभावनाो उन्होंने बल शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा था– 'भले ही मुझे बार–बार जन्म लेना पड़े और जन्म–मरण की अनेक यातनाओं से गुजरना पड़े लेकिन मैं चाहूंगा कि मैं उस एकमात्र ईश्वर की सेवा कर सकूं, जो असंख्य आत्माओं का ही विस्तार है। वह और मेरी भावना से सभी जातियों, वर्गों, धर्मों के निर्धनों में बसता है, उनकी सेवा ही मेरा अभीष्ट है।'

सवाल यह है कि स्वामी विवेकानंद में राष्ट्र और इसके पीड़ितजनों की सेवा की भावना का उद्‌गम क्या था? क्यों उन्होंने निजी मुक्ति से भी बढ़कर राष्ट्रसेवा को ही अपना लक्ष्य बनाया। अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से प्रेरित स्वामी विवेकानंद ने साधना प्रारंभ की और परमहंस के जीवनकाल में ही समाधि प्राप्त कर ली थी किंतु विवेकानंद का इस राष्ट्र के प्रति प्रारब्ध कुछ और ही था इसलिए जब स्वामी विवेकानंद ने दीर्घकाल तक समाधि अवस्था में रहने की इच्छा प्रकट की तो उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें एक महान लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हुए कहा– 'मैंने सोचा था कि तुम जीवन के एक प्रखर प्रकाश पुंज बनोगे और तुम हो कि एक साधारण मनुष्य की तरह व्यक्तिगत आनंद में ही डूब जाना चाहते हो, तुम्हें संसार में महान कार्य करने हैं, तुम्हें मानवता में आध्यात्मिक चेतना उत्पन्न करनी है और दीनहीन मानवों के दुरूखों का निवारण करना है।'

स्वामी विवेकानंद अपने आराध्य के इन शब्दों से अभिभूत हो उठे और अपनें गुरु के वचनों में सदा के लिए खो गए। स्वयं रामकृष्ण परमहंस भी विवेकानंद के आश्वासन को पाकर अभिभूत हो गए और उन्होंने अपनी मृत्यशैया पर अंतिम क्षणों में कहा– 'मैं ऐसे एक व्यक्ति की सहायता के लिए बीस हजार बार जन्म लेकर अपने प्राण न्योछावर करना पसंद करूंगा।'

जब 1886 में पूज्य रामकृष्ण परमहंस ने अपना नश्वर शरीर त्यागा तब उनके 12 युवा शिष्यों ने संसार छोड़कर साधना का पथ अपना लिया, लेकिन स्वामी विवेकानंद ने दरिद्र–नारायण की सेवा के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक सारे भारत का भ्रमण किया। उन्होंने देखा कि देश की जनता भयानक गरीबी से घिरी हुई है और तब उनके मुख से रामकृष्ण परमहंस के शब्द अनायास ही निकल पड़े– 'भूखे पेट से धर्म की चर्चा नहीं हो सकती।'

किसी भी रूप में धर्म को इस सबके लिए जवाबदार माने बिना उनकी मान्यता थी कि समाज की यह दुरावस्था (गरीबी) धर्म के कारण नहीं हुई बल्कि इस कारण हुई कि समाज में धर्म को इस प्रकार आचरित नहीं किया गया जिस प्रकार किया जाना चाहिए था।'

अपने रचनात्मक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए 1 मई 1879 को स्वामीजी ने रामकृष्ण मिशन एसोसिएशन की स्थापना की और इसकी कार्यपद्धति इस प्रकार निश्चित की गईदृ

–ऐसे कार्यकर्ताओं को तैयार करना और प्रशिक्षित करना, जो देश की जनता के भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए ज्ञान–विज्ञान के वाहक बन सके। –कला, संस्कृति व उद्योगों को समुचित प्रोत्साहन देना। –लोगों में इस प्रकार धार्मिक विचारों का प्रचार करना कि वे रामकृष्ण परमहंस के विचारानुसार सच्चे मानव बन सकें। वास्तव में विवेकानंदजी ने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन नाम से दो पृथक संस्थाएं गठित कीं यद्यपि इन दोनों संस्थाओं में परस्पर नीतिगत सामंजस्य था तथापि इनके उद्देश्य भिन्न किन्तु पूरक थे। रामकृष्ण मठ समर्पित संन्यासियों की श्रृंखला तैयार करने के लिए थी जबकि दूसरी रामकृष्ण मिशन जनसेवा की गतिविधियों के लिए थी। वर्तमान में इन दोनों संस्थाओं के विश्वभर में सैंकड़ों केंद्र हैं और ये संस्थाएं शिक्षा, चिकित्सा, संस्कृति, अध्यात्म और अन्यान्य सेवा प्रकल्पों के लिए विश्वव्यापी व प्रख्यात हो चुकी हैं।

शिकागो संभाषण के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को भारत के विश्वगुरु होने का दृढ़ सन्देश दे चुके स्वामी जी को पश्चिमी मीडिया जगत "साइक्लोनिक हिन्दू" के नाम से पुकारने लगा था। इन महान कार्यों की स्थापना के बाद स्वामी जी केवल पांच वर्ष ही जीवित रह पाए और मात्र चालीस वर्ष की अल्पायु में उनका दुखद निधन हो गया किन्तु इस अल्पायु के जीवन में उन्होंने सदियों के जीवन को क्रियान्वित कर दिया था। इस कार्य यज्ञ हेतु उन्होंने सात बार सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया था और पाया था कि जनता गहन अंधकार में भटकी हुई है। उन्होंने भारत में व्याप्त दो महान बुराइयों की ओर संकेत किया– पहली महिलाओं पर अत्याचार और दूसरी जातिवादी विषयों की चक्की में गरीबों का शोषण। उन्होंने देखा कि कोई नियति के चक्र से एक बार निम्न जाति में पैदा हो गया तो उसके उत्थान की कोई आशा नहीं रखती थी। उस समय तो निम्न जाति के लोग उस समय सड़क से गुजर भी नहीं सकते थे जिससे उच्च जाति के लोग आते–जाते थे। स्वामीजी ने जाति प्रथा की इस भीषण दुर्दशा को देखकर आर्त स्वर में कहा था– 'आह! यह कैसा धर्म है, जो गरीबों के दुख दूर न कर सके।'

उन्होंने कहा कि पेड़ों और पौधों तक को जल देने वाले धर्म में जातिभेद का कोई स्थान नहीं हो सकताय ये विकृति धर्म की नहीं, हमारे स्वार्थों की देन है। स्वामीजी ने उच्च स्वर में कहा– 'जातिप्रथा की आड़ में शोषण चक्र चलाने वाले धर्म को बदनाम न करें।' विवेकानंद एक सुखी और समृद्ध भारत के निर्माण के लिए बेचौन थे। इसके लिए जातिभेद ही नहीं, उन्होंने हर बुराई से संघर्ष किया। वे समाज में समता के पक्षधर थे और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के प्रति उनके मन में गहरा रोष था। उन्होंने कहा– 'जब तक करोड़ों लोग गरीबी, भुखमरी और अज्ञान का शिकार हो रहे हैं, मैं हर उस व्यक्ति को शोषक मानता हूं, जो उनकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दे रहा है।'

स्वामी विवेकानंद के मन में समता के लिए वर्तमान समाजवाद की अवधारणा से भी अधिक आग्रह था। उन्होंने कहा थादृ 'समता का विचार सभी समाजों का आदर्श रहा है। संपूर्ण मानव जाति के विरुद्ध जन्म, जाति, लिंग भेद अथवा किसी भी आधार पर समता के विरुद्ध उठाया गया कोई भी कदम एक भयानक भूल है और ऐसी किसी भी जाति, राष्ट्र या समाज का अस्तित्व कायम नहीं रह सकता, जो इसके आदर्शों को स्वीकार नहीं कर लेता।' स्वामी विवेकानंद ने आर्तनाद भरे स्वर में कहा था कि 'अज्ञान विषमता और आकांक्षा ही वे तीन बुराइयां हैं, जो मानवता के दुरूखों की कारक हैं और इनमें से हर एक बुराई दूसरे की घनिष्ठ मित्र है।' आजकल बहुधा नहीं बल्कि सर्वदा ही कहा जाने लगा है कि शासन और प्रशासन को धर्म, संस्कृति और परम्पराओं के सन्दर्भों में धर्मनिरपेक्ष होकर विचार और निर्णय करने चाहिए। यहाँ पर यह बड़ा यक्ष प्रश्न बन कर उभरता है कि धर्म निरपेक्षता आखिर है किस चिड़िया का नाम? आज हमारे देश के तथाकथित बुद्धिजीवी और प्रगतिशील कहलाने वाला वर्ग धर्मनिरपेक्षता के जो मायने निकाल रहा है क्या वह सही है? क्या धर्मनिरपेक्षता शब्द के जो अर्थ चलन में उतार दिए गएँ हैं वे रत्ती मात्र भी प्रासंगिक और उचित हैं? इस वैचारिक सन्दर्भ में भारत में जो अर्थशास्त्र का बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा सिद्धांत लागू है वह संभवतः दुर्योग से विश्व में एक हमारे यहाँ ही सांस्कृतिक जीवन में भी लागू हो रहा है!! वर्तमान में हमें इस पीड़ादायक तथ्य को स्वीकार करना होगा कि भारत की वैचारिक दुनिया में जिस प्रकार बुरे विचारों ने अच्छे विचारों को प्रचलन से बाहर कर दिया है या करते जा रहा है तब स्वामी जी के विचारों का प्रकाश ही हमें इस षड्यंत्र पूर्वक बना दिए गए कुचक्र से बाहर निकाल सकता है।

य.ब

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words;
Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things;
Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you";
Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen;
Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer;
The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program;
The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**